परम पावन परम जी द्वारा समस्त मानव मात्र को संदेश ।

पवित्रात्मन

हरिः ओउम्

"तुम मुझसे मेरी साधना का निजी अनुभव जानना चाहते हो। मैं अपने आप को नहीं जानता । केवल मैं अपने शरीर के अन्दर और बाहर अनेक ब्रह्माण्ड देखता हूँ मैं अपना अस्तित्व ब्रह्माण्ड में और ब्रह्माण्ड से परे भी पाता हूँ । मेरे पास क्यों-कैसे का जवाब देने के लिए शब्द नहीं हैं"

"सच्चाई से कहूँ । मैं पृथ्वी हूँ। व्यक्तिगत प्राणी पेड़ हैं । पृथ्वी एक होती है । पेड़ अनेक । प्रत्येक वृक्ष अपने बनावट और प्रकृति के अनुकूल ही स्वाद ग्रहण करता है ।"

"मधुमक्खियाँ मुझमें शहद खोजती हैं, सुअर मल खोजते हैं और मक्खियाँ शहद और मल दोनों । स्वयं अपने अंदर झाँको और स्वयं को पहचानो । तुम अपने अस्तित्व के अनुसार मुझे पाओगे । साधना करो और अपने अस्तित्व से ऊपर उठो तुम जीवित हो ।"

"सच्चाई से कहूँ मेरे मार्ग-दर्शन में साधना करने वाले साधक के लिए मुक्ति कुछ भी नहीं है । मुझ पर विश्वास करो मेरे मार्ग दर्शन में की गई साधना आपको मुक्ति दाता बना सकती है ।"

"वह जो इसका प्रतिदिन अध्ययन करेंगे और वह जो मेरे मार्ग दर्शन में प्रतिदिन साधना करेंगे उन्हें भी समय आने पर ऐसे ही अनुभव होंगे । उनका जीवन और अस्तित्व वर्तमान से बेहतर होगा । बाकी मैं व्यक्तिगत प्राणी पर छोड़ता हूँ । जिनका जीवन कुत्तों और प्रसन्न सुअरों की तरह है । मेरे द्वारा रिक्त छोड़े गये को वे स्वयं ही भरेंगे । निन्दनीय बचन की प्रतीक्षा करो । आप इस पुस्तक पर, मुझ पर और स्वयं तथा अन्य महान साधकों पर कई व्यंग-विचार सुनेंगे ।"

प्रेम और आशीर्वाद के साथ

अद्वैतानन्द

* चरणं शरणं गच्छामि *

परम पूज्य परम जी की सेवा में,

* भाग्य की विडम्बना *

मैं बचपन से ही धर्म,भीरु एवं आस्थावान व्यक्ति हूँ। साठ वर्ष की अवस्था तक मैंने पूजा - पाठ अवश्य नहीं किया, परंतु एक अध्यापक के रुप में विद्या-प्रेम तथा अपने कार्य का सम्पादन ईश्वरीय देन के रुप में मान कर करता रहा। मैं उसी को ईश्वर की सेवा मानता रहा। इससे मुझे पूर्ण संतोष था और जीवन के असफलता के क्षणों में भी मैं कभी निराश नहीं हुआ। जीवन आनंदमय एवं सुखी था और भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा बनी रही।

साठ वर्ष की आयु पूर्ण कर लेने के बाद क्रमशः ईश्वरीय भक्ति की ओर आकृष्ट हुआ और प्रतिदिन दुर्गा पाठ करना आरंभ कर दिया। इसके छह महीने बाद स्थानीय सत् साईं समाज के सम्पर्क में आया और पड़ोस के एक घर में साईं बाबा के चमत्कार देखकर मैं उधर बड़ी तेजी से आकृष्ट हुआ। जून 1976 से मेरे यहाँ साईं कीर्तन प्रारम्भ हुआ।और प्रत्येक शुक्रवार को मैं साईं कीर्तन में सम्मिलित होने लगा। आकर्षण बढ़ता ही गया और मैं अपनी पत्नी के साथ 1976 के दशहरा के अवसर पर पुटवर्ती गया। वहाँ दस दिन साईं बाबा के अति निकट रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। दशहरा के दिन बाबा का चमत्कार देख कर उनके प्रति भक्ति से हृदय सराबोर हो गया और मैं एक प्रेमनिष्ठ साईं भक्त के रुप में घर लौटा।

मेरे भाग्य की बिडम्बना :- भी लगभग उसी समय से शुरु होती है। जबसे मैं साईं समाज के प्रति आकृष्ट हुआ। एक

गृहस्थ की भाँति मन में तो यह इच्छा भी थी कि साठ वर्षों तक गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के पश्चात् जीवन का शेष भाग भगवत् भजन में लगाऊँ, परंतु मेरे जीवन के तीन कार्य अभी अधूरे थे। उन्हें मैं यथा शीघ्र सम्पादित कर लेना चाहता था। ताकि मैं अपने जीवन को पूर्ण रूप एकाग्र कर भगवत् भक्ति कर सकूँ। मुझे पूर्ण विश्वास था कि मैंने अब तक जो मानव सेवा की है, वह अर्जित पुण्य एवं नवोदित भगवत् भजन मेरे कार्यों की पूर्ति में सहायक होंगे। परंतु इन दोनों में से एक ने भी अभी तक साथ नहीं दिया इतना ही नहीं, घोर निराशा एवं बाधाएं मार्ग में आने लगी। चूँकि मेरे मन में बाबा के प्रति लगन अधिक थी। अतः मैं निरंतर दैनिक कीर्तन में उनसे निरंतर प्रार्थना करता रहा कि भगवन् मुझे सहारा दो तथा शीघ्र मेरा कार्य पूर्ण कराओ। प्रार्थना का फल उल्टा मिला। जिस कार्य में मैं लगा हुआ था वह और उलझता चला गया। इतना ही नहीं 24 दिसम्बर 1976 को मेरे घर पर बाबा का कीर्तन था। मैं 3 बजे दिन में माला आदि बनाने में जुट गया। तभी मुझे एकाएक हृदय रोग का दौरा पड़ा। दौरा के दौरान ही शाम 7 बजे से 8 बजे तक कीर्तन चला तत्पश्चात् उपचार प्रारम्भ हुआ। इससे एक झटका लगा परन्तु महीने भर के भीतर फिर बाबा के प्रति श्रद्धा जाग उठी, परन्तु उसमें पहले जैसी तीव्रता अवश्य नहीं थी। निरोग होने पर मैं पुनः कीर्तन आदि में पूर्ववत भाग लेने लगा।

मेरी उपर्युक्त 3 समस्यायें थीं :-

1. अपनी शहरी जमीन का कुछ भाग बेंचकर निजी आवास बनाना।
2. अपने पुत्रों की जीविका का प्रबन्ध करना।
3. अपने 35-40 वर्षों के अध्ययन को भावी पीढ़ी के लिये

सुरक्षित करना अर्थात कुछ ग्रन्थों की रचना।

अब इसमें चौथी समस्या आ गयी है, अपना क्षीण स्वास्थ्य। इसमें प्रथम समस्या जिसे मैं सबसे सरल समझता था, सबसे अधिक दुरूह हो गयी। इसमें सहायतार्थ बाबा से तथा अन्य देवी देवताओं से निरन्तर प्रार्थना करता चला आ रहा हूँ और जितनी प्रार्थनायें करता जा रहा हूँ। समस्या उतनी ही उलझती जा रही है। इससे मेरी आस्था प्रायः डगमगाने लगी है। मैं सोचने लगता हूँ कि पुनः 60 वर्ष की आयु के पूर्व की स्थिति में वापस क्यों न चला जाऊँ और जितना समय पूजा पाठ में लगाया हूँ, उसे ग्रन्थ रचनादि कार्यों में क्यों न लगा दूँ? इस समय वस्तुतः मेरी स्थिति उलझन पूर्ण हो गयी है। जिससे घोर मानसिक अशान्ति है। मैं सन्यासी तो हूँ नहीं गृहस्थ था, और बाध्य हूँ गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के लिये क्योंकि जब तक उपर्युक्त कार्य पूर्ण नहीं होते, मैं अपने उत्तर-दायित्व से मुक्त नहीं हो सकूँगा। सन्यास भाव धारण करने की जो अभिलाषा थी, उसमें दैवी शक्तियाँ बाधक प्रतीत हो रही हैं। उपरोक्त शब्द बाबा का अर्थ साईं बाबा से है।

बाबा अर्थात परम जी पिछले जनवरी-फरवरी में प्रथम साक्षात्कार हुआ और मैं आपके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आपके बतलाये मार्ग पर अग्रसर हुआ। प्रतिदिन सबेरे ओउम् दुँ दुर्गाय नमः मन्त्र के साथ प्राणायाम, गणेश, विष्णु, शिव-पार्वती, सरस्वती, षोडशर मातृकायें, राम, कृष्ण, शिरडी साईं, सत्य साईं, तथा गुरू की वन्दना, आदित्य हृदय का पाठ, शिव स्तुति एवं रूद्राष्टक, हनुमान चालीसा के पाठ के पश्चात् सप्त श्लोकी दुर्गा पाठ, अष्टोत्तर शतनाम स्त्रोत्रकम् (108 दुर्गा जी का नाम) कवच, दुर्गा सप्तशती से दुर्गा जी की कोई एक वन्दना तथा

अन्तिम मन्त्र सिद्ध कुंजिका स्त्रोत्रम् एवं आरती के साथ प्रातः की पूजा समाप्त करता हूँ।
शाम को 35-40 मिनट कीर्तन करता था, परन्तु जब से शारीरिक दुर्बलता बढ़ गयी है, तब से शाम का कीर्तन बन्द कर दिया है। रात्रि में ओउम् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै बिच्चै नमः मन्त्र का एक माला जाप कर सो जाता हूँ। जहाँ तक सम्भव हो पाता है - साप्ताहिक कीर्तन में भाग लेता रहता हूँ। परन्तु मेरी निजी परेशानियाँ इतनी अधिक बढ़ गयी हैं कि हृदय को शान्ति नहीं मिल पा रही है। पिछले 3 वर्षों से किसी भी देवी - देवता से कुछ भी सहायता नहीं मिली जिससे चित्त की उद्विग्नता बढ़ती ही जा रही है। इस स्थिति में क्या आप पथ प्रदर्शन कर सकेंगे ?

ह0 राम वृक्ष
08.10.1978

I 6575/35.H.H.O.

परम पूज्य परम जी के कर कमलों द्वारा लिखा हुआ उत्तर पुस्तिका

मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी
कृष्ण सम्वत् 5204,
वि0सं0-2035
08.12.1978

पोरबन्दर-गुजरात→
डा0 राम वृक्ष सिंह
1, हीरा पुरी, गोरखपुर (उ0प्र0)
परमादरणीय पवित्रात्मन,

सप्रेम हरिः ओउम्। आपका पत्र 12.10.1978 बहुत पूर्व ही मिला था, किसी कारणवश मैंने कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा 5204 वि0 संवत्-2035 के दिन से आपके पत्र का उत्तर लिखना आरम्भ किया। पत्राचार खण्डों में है। चारों का लक्ष्य आपके मन की शान्ति है। अतः धैर्य से तारतम्य मिलाकर पढ़ें।

अवकाश के समय शान्त वातावरण में शान्त मन से पढ़ें। मनन करें, बार-बार मनन करें, और यथासम्भव अपने जीवन की दिशा को बदलने का यत्न करें। आपको कुछ शान्ति का अनुभव अवश्य होगा। आपकी सभी बातों का (जो आपके हृदय में उथल पुथल मचाये है) उत्तर पत्र द्वारा सम्भव नहीं है, फिर भी मैंने यथा सम्भव प्रयास किया है। सकल उहा-पोह निवारण हेतु प्रयत्न कभी मिलने पर करूँगा। यदा - कदा अपना कुशल लिखते रहें।

प्रेम और आशीर्वाद के साथ

ह0 अद्वैतानन्द

प्रथम-खण्ड प्रारम्भ

आपने अपने पत्र दि012.10.1978 **"भाग्य की बिडम्बना"** में वे ही बातें लिखी हैं, जिन्हें आपने मुझसे-2फरवरी-गुरूवार-1978 को प्रथम मिलन के अवसर पर कही थी।

आप विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे हैं, कई वर्ष तक आपने विश्वविद्यालय की उच्चतम कक्षा को पढ़ाया है। आपने कई शोध कार्य किये हैं तथा कई शोध कार्य करवाये हैं। इतने बड़े विद्वान होकर आप अपने पत्र में लिखते हैं.....वहाँ इस दिन तक साईं बाबा के अति निकट रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। आपके इस वाक्य का क्या अर्थ है? मैं समझ नहीं पाता। क्या आप बाबा की सेवा में रहे? सेवा से मेरा तात्पर्य बाबा को नहलाने-धुलाने, भोजन इत्यादि कराने से ही है। क्या आप बाबा के रूम अथवा बाबा के बगल वाले रूम में सोये? यदि नहीं तो आप बाबा के निवास-स्थान के अति निकट रहे हैं, बाबा के निकट नहीं। पुनश्च यदि आप बाबा की सेवा में भी रहते तो आप बाबा के शरीर के निकट रहते, बाबा के निकट नहीं।

बाबा जैसा सिद्ध तान्त्रिक ही बाबा के निकट रह सकता है। अन्य व्यक्ति बाबा से कोसों दूर रहता हैं। अभिमान वश कहता है: मैं बाबा के अति निकट रहा हूँ, उन्हें देखा है, परखा है, उनके सैकड़ों चमत्कार देखे हैं। समझ बूझ कर बाबा का भगत बना हूँ, इत्यादि - ये वाक्य अज्ञानता का मूलक है। अज्ञानता ही दुःख का कारण है।

साईं बाबा के चमत्कार को देखकर आप साईं भक्त बने, पूजा-पाठ और बाबा के नाम का कीर्तन करते रहे, किन्तु आप दिन-प्रतिदिन दुखी ही होते गये, आज चारों ओर अन्धकार ही प्रतीत हो रहा है। आपकी आस्था डगमगा रही है, इत्यादि ही

आपके पत्र **"भाग्य की विडम्बना"** का आशय है। आपने पत्र के अन्त में लिखा हैं ऐसी स्थिति में क्या आप पथ - प्रदर्शन कर सकेंगे।

मैंने पथ-प्रदर्शन 2 फरवरी 1978 को ही आरम्भ कर दिया। आपको कुछ साधना भी बताया था। आपने मेरे आदेश का पालन भी किया है, किन्तु मेरे आदेश के अतिरिक्त भी कुछ किया है। यथा-गणेश, विष्णु, शिव, दुर्गा, सरस्वती, षोडशर-मातृकायें, राम, कृष्ण, शिरडी साईं, सत्य साईं तथा गुरू की वन्दना, तत्पश्चात् आदित्य-हृदय पाठ, शिव स्तुति एवं रूद्राष्टक इत्यादि।

इस नवरात्र में आपने मेरे आदेशानुसार जाप किया, 03.10.1978 प्रथम दिन ही दुर्गा की तस्वीर पर शहद जैसी किसी वस्तु की 2 बूँदें आपको दिखायी दी। 04.10.1978 को तस्वीर पर 3-4 बूँदें दृष्टिगत हुई। 08.10.1978 को दुर्गा के फोटो पर पहले और दूसरे दिन की भाँति चमकती हुई छीटें दृष्टिगोचर हुई, रात्रि में कुछ स्वप्न आये, कभी-कभी मन शान्त रहा, शेष अशान्त और निराशा से पूर्ण। यही है आपके पत्र दिनाँक 12.10.1978 का सारांश।

दुर्गा जी के चित्र पर शहद जैसी कुछ बूँदें दिखना भी एक चमत्कार है। साईं बाबा के चित्र पर शहद जैसी कुछ बूँदें देखकर लोग उनके भक्त बन जाते हैं। बाबा के भक्त कहते हैं: अजी बाबा के फोटो से शहद आता है, इत्यादि। ऐसा चमत्कार कोई नहीं कर सकता, अतः सत् साँईं बाबा अवतार हैं। इनकी उपासना से सब कुछ हो सकता है।

स्मरण रहे, सत् साँईं बाबा ने स्वयं अपने मुख से कभी कहे थे, मैं शिरडी साईं बाबा का अवतार हूँ। काल - क्रम में कहने लगे: मैं ही शिव का अवतार हूँ । मैं कृष्ण का अवतार हूँ ।

आज कल कहते हैं मैं ही बार-बार अवतार लेता हूँ, उस समय कृष्ण था, अब यहाँ हूँ । आगे यह होऊँगा इत्यादि क्या सत्य है, वह बाबा ही जानें, अथवा बाबा के भक्त जानें।

बाबा चमत्कार दिखाता था। अब किसी कारण वश चमत्कार दिखाना बन्द कर दिया है। चमत्कार से प्रभावित होकर उनके बहुत भक्त हुये। धन भी अच्छा इकट्ठा हुआ, साईं समाज का निर्माण हुआ। भजन और कीर्तन बने इत्यादि।

आप भी चमत्कार से प्रभावित होकर ही साईं भक्त बने, पूजा-पाठ करने लगे, किन्तु आपकी आशा पूर्ण नहीं हुई। आप दिन-प्रतिदिन दुःख ही पा रहे हैं। भगवन् चमत्कार को देखकर भक्त बन जाना ही आपके **"भाग्य की बिडम्बना है।"**

आपको शिक्षा देने के लिए ही मैंने इस नवरात्र में आपसे जाप करवाया। दुर्गा की तस्वीर पर आपको शहद जैसी वस्तु दिखाई दी। इस चमत्कार के बावजूद भी आप दुःखी रहे, अतः अब भी चेतें।

आप मेरे शिष्य हैं और बाबा के भक्त। आपने फरवरी 1978 में प्रथम मिलन के दिन मुझे गुरू माना। गुरू का काम ही पथ-प्रदर्शन है। मैं शनैः-शनैः पथ दिखाता हूँ। कारण अभी नहीं बतलाना चाहता हूँ।

आपका बाबा चमत्कार दिखाता था। मैं चमत्कार नहीं दिखाता हूँ । चमत्कार मैं दिखा भी नहीं सकता, कारण सभी चमत्कार मुझ में ही हो रहे हैं। मुझे ऐसा अनुभव होता है,कि चराचर जगत मुझ में ही स्थित है। उद्भव, स्थिति और प्रलय मुझ में ही हो रहे हैं। मेरे अन्दर तरंग का उठना ही जीवन है, तरंग का शान्त हो जाना ही मृत्यु अथवा प्रलय। आपका बाबा भी मुझमें ही स्थित है और मुझमें ही विलीन हो जायेगा। अभिमान वश कुछ दिखाता और बोलता है। उसी अभिमान का फल भी भोग रहा है। न विश्वास हो तो अभी

जाकर देखें। दशहरा 1976 के कुछ महीना बाद ही बाबा को लकवा मार गया। इसका इलाज अभी तक चल रहा है। यदि आप अति निकट जा सकते हो-तो इस बात की सत्यता का भी ज्ञान हो जायेगा। स्मरण रहे, मेरा अति निकट आपके अति निकट से भिन्न है।

मैंने आज तक कोई चमत्कार नहीं दिखाया है। मेरा कोई नाम और रूप भी नहीं है। फिर भी लोग मुझे किसी नाम से जानते हैं, और किसी रूप में देखते हैं। अज्ञानी जीव मुझे चमत्कार दिखाते हुये भी देखते हैं। आपके घर में नवरात्र में जो कुछ हुआ, दुर्गा की तस्वीर पर आपको जो कुछ दिखा, आप उसे चमत्कार मान सकते हैं। आप स्वमन्तव्या-मन्तव्य में स्वतन्त्र हैं। किन्तु आपका अधिकार केवल चिल्लाने तक ही सीमित है। आगे आप स्वतन्त्र नहीं हैं, चिल्लाने से जो थकान होगी, उसे आपको ही भोगना पड़ेगा। यही हाल है अन्य कर्मों का भी। आपके विश्वास और अविश्वास से कर्म फल में कोई अन्तर नहीं आना है।

आपके मानने न मानने से ब्रह्माण्ड के नियम में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। आप दिन को रात मान सकते हैं, किन्तु आपके मानने मात्र से दिन में सूर्य का अभाव नहीं होगा इत्यादि। इसी तरह मेरा नाम अथवा किसी के नाम जपने मात्र से सकल दुःख की निवृति हो जायेगी। ऐसा मान लेने मात्र से काम नहीं चलेगा। भगवन् नाम जपने मात्र से आपको भोजन नहीं मिलता है। यही है आपके प्रतिदिन का अनुभव।

आपने जो अब तक चमत्कार देखे हैं, वह कुछ भी नहीं है। इससे भी बड़ा चमत्कार लोगों ने देखा है। यथा उत्तराखण्ड के किसी पहाड़ में मैं रहा करता था, लोग मुझे दत्त भगवान

के नाम से जानते थे। कुछ लोग मुझे अजानुबाहु भी कहते थे। एक दिन मुझसे कुछ व्यक्ति मिलने आये। मैंने एक व्यक्ति से पूछा- तुम मुझे अजानुबाहु क्यों कहते हो, वह बोल पड़ा - आपके दोनों हाथ आपके दोनों घुटनों को छूते हैं। अतः मैं आपको भगवान् अजानुबाहु कहता हूँ । मुझे बहुत हंसी आयी। मैं पुनः पूछा भाई, यह बात तो रही अजानुबाहु की, आखिर तुम मुझे भगवान् क्यों कहते हो? अभी आपने उस दिन - उस साल एक नव विवाहिता के पति को जिन्दा कर दिया था। ऐसा काम भगवान के अतिरिक्त और कौन कर सकता है। पुनश्च मैंने आपको कई बार अजमाकर देखा है। आप मेरे स्मरण करते ही प्रगट हुये हैं। मेरी बहुत सी कामनायें आपके द्वारा सिद्ध हुई हैं।अतः आप भगवान हो। इतने में एक बोल पड़ाः- अजी उस दिन मैं नदी किनारे पानी लेने गया था, तो देखा कि आप पानी पर चलते नदी पार कर गये। इतने में एक और बोल पड़ा, अजी उस दिन आप एकाएक इस पहाड़ी से उस पहाड़ी पर आकाश में चलते जाते दिखाई पड़े थे। आपकी गति बहुत तेज थी, एक मिनट में ही नजर से ओझल हो गये। ऐसा काम तो भगवान ही कर सकता है। अतः आप भगवान हो।

मृत व्यक्ति कैसे जीवित हुआ, इसका रहस्य मेरे तक ही सीमित है। मैं पानी पर कैसे चला अथवा आकाश मार्ग से पैदल कैसे आया। इन सबका रहस्य मेरे तक ही सीमित है। किसी के मन की बात मैं कैसे जानता। किसी के पूर्व जन्म की बात मैं कैसे जानता। अपने आपको किसी के घर में कैसे प्रगट कर देता, मेरे को अपमानित करने वाला कैसे दुःखी होता, इत्यादि का रहस्य मेरे तक ही सीमित है। यह रहस्य मैं बताना भी नहीं चाहता हूँ। यदि लोग इन चमत्कारों को देखकर मेरा आलसी भक्त , अज्ञानी भक्त बनते हैं। तो यह उनकी गल्ती है। इसका फल भी उन्हें भोगना ही

केवल मेरा नाम मात्र जपने से काम नहीं चलेगा। कुछ कर्म भी करना पड़ेगा।(केवल मेरा नाम मात्र जपने से काम नहीं चलेगा। कुछ कर्म भी करना पड़ेगा।)

अभी हाल में ही एक घटना घटी है। डा0 गोविन्द भाई पटेल - 29, श्रृंगार नगर सोसाइटी, (अम्बा) सूरत-1, मेरा शिष्य बना, मुझे प्रतीत हुआ, यह व्यक्ति अब जाने वाला ही है, किंतु किसी कारण वश मैंने शिष्य बना लिया। शिष्य बनने के कुछ दिन बाद वह बीमार पड़ा, उनका लड़का कहने आया। पिताजी बेहोश हैं, अस्पताल में हैं। किसी को पहचानते नहीं हैं। केवल गायत्री मन्त्र .का जाप जोर-जोर से कर रहे हैं। ग्लूकोज इत्यादि चढ़ रहा है। मैंने पहले तो टाल दिया, कारण मैं जानता था कि वह नहीं बचेगा। पुनः अपने सेवक श्री प्रताप सिंह के भय को दूर करने के लिए मैं अस्पताल चला गया। अब वह ठीक ठाक है। आप पत्र द्वारा उसके पुत्र श्री राजू गोविन्द भाई पटेल से सारा हाल पूछ सकते हैं। गोविन्द भाई अपनी बेहोशी का हाल नहीं बता सकता है, बेहोशी का हाल तो राजू ही बता पायेगा।

यहाँ आपके मन में तर्क उठेगा कि मैं अपने सेवक के भय का दूर करने के लिए अस्पताल गया। इस वाक्य का क्या अर्थ है? इसका स्पष्टीकरण, मेरा सेवक कहने लगा। आपको जाना चाहिये। आपका सेवक बीमार है, इत्यादि। मैं बोला भाई वह तो मर रहा है। सेवक बोला कैसे कहते हैंः- शायद बच ही जाये। अपने कमरे में ही जहाँ सेवक के साथ मैं बैठा था। वहीं मैंनें डा0 गोविन्द भाई को दिखा दिया, यह देखते ही सेवक भयभीत हो गया। उसके भय को दूर करने के लिए मेरे द्वारा यह चमत्कार हुआ, वस्तुतः गोविन्द भाई मर चुका था, किन्तु अब जिन्दा है, अभी रहेगा भी। आगे मरेगा।

*चमत्कार का दूसरा प्रकार :- आप जब मिले थे। उसके बाद मैं बंगाल की तरफ चला गया। दार्जिलिंग में एक व्यक्ति ने कुमई टी स्टेट (Kumai Tea State) आने का निमन्त्रण दिया। मैं 28 मार्च 1978 को लगभग 11 बजे दिन में चालसा टी स्टेट पहुँचा। कुछ घंटो में कुमई टी स्टेट के मैनेजर जिन्होंने मुझे अपने यहाँ आने का निमन्त्रण दिया था। जीप लेकर आ गये। मेरा सामान इत्यादि लेकर कुमई टी स्टेट ले गये। रात्रि में प्रवचन हुआ, दूसरे दिन भी अच्छा बीता। तीसरे दिन एकाएक वर्षा के साथ ओला गिरने लगा। मैनेजर साहब कार्यालय में थे। मैनेजर के बंगले में मैं बैठा था, सामने की कुर्सी पर प्रभा बहन मैनेजर की घरवाली बैठी थी। वह कुछ गम्भीर हो गयी थी, मैंने कारण पूछा। वह बोल पड़ी ओला गिर रहा है - इत्यादि। उनके कहने से मेरा दिल भर आया, एक भावना उठी और ओला गिरना बन्द हुआ, जबकि अन्य बागानों में ओला गिरता ही रहा। अगल-बगल के बागानों का ओला प्रहार से बहुत नुकसान हुआ। मैं जिसमें बैठा था उस बागान का कुछ भी नहीं बिगड़ा।

आप इस घटना की सत्यता की भी जाँच कर सकते हैं। वैसे मैनेजर साहब साईं भक्त हैं। अतः इस चमत्कार का श्रेय सत् साईं बाबा को ही देना चाहते हैं। मुझे इसका दुःख नहीं है। यह उनकी इच्छा है कि वे सत् साईं बाबा को इसका श्रेय देते रहें। मैं श्रेय लेने के लिए चमत्कार दिखाता भी नहीं हूँ। मेरे न चाहते हुए भी मुझसे कभी-कभी चमत्कार हो ही जाता है। मेरी इच्छा ही तो प्रकृति है। अतः कुछ भी दिख जाना सम्भव है। अज्ञानी इसे चमत्कार मान लेता है।

*मिश्रित चमत्कार :- (1) श्री मुकुट बिहारी-कनौडिया आयल मिल्स-दिल्ली- 6,मेरे शिष्य हैं। कभी-कभी अज्ञानता वश कुछ ऐसे काम कर देते हैं कि मेरे अन्दर कुछ और तरह की भावना बन जाती है। फल भी प्रत्यक्ष होता है।

सम्मान करने का फल-लाभ, अपमानित करने का फल-नुकसान हुआ है। जमनोत्री के रास्ते में बस उलट गयी। मैं भी उसी बस में था। किसी का बाल भी बांका नहीं हुआ। आप यहाँ कहेंगे बस उल्टी ही क्यों? भगवन् इसके कारण बहुत हैं-सब लिखने से पुस्तक ही बनेगी। एक बार अपमानित किये तो लाखों का नुकसान के साथ-साथ मानसिक परेशानी भी हुई। नुकसान का ब्यौरा करोलबाग का एक व्यक्ति 60 हजार रूपयों का चकमा दिया। वृन्दावन आयल मिल में चोरी हुई। अन्य नुकसान हुए इत्यादि।

(2) श्री राधा कृष्ण सिहोटिया, फैन्सी बाजार, गुवाहाटी- उस क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। उनका स्वभाव बहुत अजीब है। सम्मानित करते-करते भी अपमानित कर देते हैं। अतः उभय भावना बन जाती है। परिणाम भी वैसा ही होता है। प्रथम बार का लाभ उन्होंने अपने मुख से बताया था। स्वामी जी आपके आने से मेरे कुछ ऐसे मामले तय हुए हैं-जो हो नहीं रहे थे। मैं अब सवा मन लड्डू हनुमान जी को चढ़ाऊँगा। मसला था मुकद्मा और कामर्स चैम्बर का। अपमान का फल यह हुआ कि लाड़ले पुत्र पटना अस्पताल में कई महीने रहे और घर के सभी व्यक्ति परेशान रहे। दूसरे बार अपमान करने का फल सीकर में मानसिक परेशानियाँ उठाई। अब आगे समय ही दिखायेगा।

राधा कृष्ण सिहोटिया का लाड़ला पुत्र मेरा शिष्य बन चुका था। मैंने कुछ सिखा दिया था, इसी कारण जान बच गई, अन्यथा मौत ही सामने थी। तीसरी बार अपमान करने का फल अभी बाकी है। समय आने पर वह भी भोगना पड़ेगा। प्रत्येक कर्म का फल तो होता ही है। आम लगाने से आम मिलता है, बबूल से काँटा, यही प्रकृति का नियम है।

(3) शान्त चमत्कार :- 11 अगस्त 1978 लगभग 4 बजे दिन में मैं श्री बलवीर गुप्त, अशोक ट्रान्सपोर्ट कारपोरेशन, 16 सिने मार्ग स्ट्रीट कलकत्ता - को उनके सेवा हेतु धन्यवाद देने उनके कार्यालय में गया था। चित्त प्रसन्न था, भावना भी उदात्त थी। मैं चलने वाला था कि कुछ बातचीत के दौरान श्री विश्वनाथ गुप्त - बलवीर के पिताजी बोल पड़े आप कौन हैं। पूछने का ढंग कुछ अजीब ही था। बहुत लोग बैठे थे। अतः जैसा एक धनी धनाभिमान में व्यवहार करता है। उसी तरह श्री गुप्त मुझसे पूछते ही रहे। आप कौन हैं?बार-बार पूछने पर मैं धीमे स्वर में बोला- मुझे लोग सन्यासी मानते हैं। महाशय जी बिना सोचे समझे बोल पड़े- आप सन्यासी हैं तो मैं डबल सन्यासी हूँ इत्यादि।

इस बातचीत के दौरान मुझे एक अजीब सा धक्का लगा। मैं इस धक्का को शान्त करते हुए बोला भाई गृहस्थ ही रहो। इसी में लाभ है, सन्यासी मत बनो। बेचारे बोलते ही गये, परिणाम बड़ा अजीब ही हुआ। 3 दिन भी नहीं बीते थे कि उनका लाड़ला पौत्र काल के गाल में चला गया। अभी भी वे दुःखी हैं। अतः पता लगा सकते हैं। सन्यासी बनने में यही होता है।

(4) साधारण चमत्कार :- मैं यदि भ्रमण पर रहता हूँ तो प्रकृति सतत् साथ चलती है। सुखदाई रहती है। जहाँ कहीं भी जाऊँगा, मेरे प्रवास के दौरान बादल और वर्षा अवश्यमेव दिखाई देंगे। इसकी जाँच आप जब मन हो, जहाँ मन हो कर लेना। गुजरात के 1973 की अनावृष्टि में मेरा गुजरात भ्रमण प्रसिद्ध है। जहाँ कहीं भी मैं गया वर्षा हुई अतः दूसरे गावों से लोग मुझे लेने आये और ले गये। स्मरण रहे, यह प्रयोग आप इस साल के अन्दर कर लें। आगे→

समय भिन्न होगा। कर्म का फल तो मिलना ही है।

चमत्कार को देखकर नमस्कार करने वाला जीव बड़ा विचित्र होता है। उन अज्ञानियों को वैसा ही जीवन बिताना पड़ेगा। जैसा वे बिता रहे हैं। ऐसे अज्ञानी सतत् दुःखी रहेंगे। इनका मोक्ष सम्भव नहीं है। साधक को चाहिये कि ऐसे अज्ञानी का संग कभी न करें।

भगवन् मैं स्वयं ऐसे अज्ञानियों से जान बचाने के लिए कभी अपना नाम बदल लेता हूँ तो कभी रूप। कभी बाल कटा लेता हूँ तो कभी बाल बढ़ा लेता हूँ, ताकि ये अज्ञानी मुझसे दूर रहें। मेरा चरित्र भी कभी- कभी अत्यन्त विचित्र होता है। कभी-कभी मर्यादा हीन भी होता है ताकि भीड़ छँट जाये।

अधिक लिखने से भ्रम बढ़ेगा, कारण बैखरी वाणी अपूर्ण वाणी है। साधारण अनुभव भी इस वाणी द्वारा व्यक्त नहीं हो पाता है। यथा केला, सन्तरा, अंगूर, चीनी का स्वाद। सभी को आप मीठा कहते हैं, किन्तु केला और चीनी के मिठास में अन्तर है। परा-जगत की वस्तु को परावाणी द्वारा ही व्यक्त किया जा सकता है। बैखरी वाणी द्वारा नहीं।

उपर्युक्त चमत्कारों का वर्णन मैं अपनी लेखनी द्वारा नहीं करना चाहता था, किन्तु आपके पथ-प्रदर्शन हेतु मुझे करना पड़ा है। बिना वर्णन किये यदि आपको कुछ लिख देता तो आप सोचते अरे? यह तो साधारण साधु है, चमत्कार दिखा तो सकता नहीं है- अतः ईर्ष्यावश कुछ बोल रहा है।

प्यारे राम वृक्ष जी,आप तो विद्वान हैं। आप जानते हैं कि सरस्वती जिह्वा पर कैसे आती है। परीक्षा कैसे पास की जाती है। डिग्री कैसे ली जाती है। इत्यादि सरस्वती के मूर्ति के आगे धूप-दीप जलाकर बैठने से सरस्वती का नाम ले-लेकर जोर-जोर

चिल्लाने से,अध्यापक का नाम लेकर जोर-जोर चिल्लाने से, अध्यापक की फोटो की पूजा करने से विद्या नहीं आ सकती है। विद्या तो पढ़ाई करने से, अध्यापक में विश्वास, श्रद्धा और प्रेम से अध्यापक के पढ़ाये गये पाठ को याद करने इत्यादि से आयेगी। हाँ प्रातःकाल कुछ जाप और ध्यान कर लेना अच्छा रहेगा इससे मन शान्त रहेगा और पढ़ाई में मन लगेगा।

अध्यापक उसी विद्यार्थी से प्रेम करता है जो बुद्धिमत्ता से मेहनत कर पाठ याद करता है। अध्यापक का नाम ले-लेकर जोर-जोर से चिल्लाने वाले विद्यार्थी को अध्यापक सतत् दूर रखता है। कभी-कभी क्लास और विद्यालय से निकाल भी देता है। आप विज्ञ हैं, अतः इतने में ही समझ जाँय। अतः यही हाल अध्यात्म का भी है अतः सचेत हो जायें - सब अपने गति से समय पर होगा।

प्रथम खण्ड समाप्त

द्वितीय खण्ड प्रारम्भ

परा और अपरा दो प्रकार की विद्याएं हैं। अपरा विद्या को हम वैखरी और मध्यमा वाणी द्वारा व्यक्त करते हैं। परा विद्या पश्यन्ति और परा वाणी द्वारा। आपको वैखरी,मध्यमा और पश्यन्ति वाणी का ज्ञान कराया जा सकता है किन्तु परा वाणी का नहीं। परा वाणी बोलने वाला और समझने वाला दोनों को सिद्ध होना चाहिए।

अपरा और परा दोनों विद्याएँ आवश्यक हैं। अपरा विद्या महल की नींव, फर्स,दीवार,खिड़की दरवाजा इत्यादि है तो परा विद्या उसकी छत है। स्मरण रहे, बिना छत महल दुखदाई ही होता है। बिना छत का घर आप को वर्षा,धूप ,तूफान-इत्यादि से नहीं बचा सकता है, किन्तु बिना दीवार के छत डाला भी जाए तो कहाँ ?

अपरा और परा दोनों के क्षेत्र विशाल हैं। दोनों के क्षेत्र चमत्कारों से परिपूर्ण हैं। शाँति हेतु दोनों का ज्ञान आवश्यक है। पूर्ण ज्ञान की स्थिति में ज्ञानी का अधिकार दोनों पर होता है।

दर्शक बुद्धि अगम्य घटना का नाम ही चमत्कार है। ऐसी घटना जो दर्शक के समझ में नहीं आती है, दर्शक चमत्कार कहता है। ऐसी घटना जिसे दर्शक ने न कभी देखी हो, न कभी सुनी हो और न उसके समझ में आ रही हो चमत्कार ही है। दर्शक के लिए स्मरण रहे जो दर्शक के लिए चमत्कार है,वह चमत्कार कर्ता के लिए एक साधारण सी क्रिया है।

अपरा विद्या के अंगों के नाम फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलोजी, बायो फिजिक्स और बायोकेमिस्ट्री इत्यादि। प्रत्येक अंग का क्षेत्र चमत्कारों से परिपूर्ण हैं। रेडियो, टी0वी0, रडार, X-Ray,

कम्पयूटर, कलकुलेटर, Dial-Phone इत्यादि अशिक्षित ग्रामीण के लिए चमत्कार ही है, किन्तु वैज्ञानिक के लिए चमत्कार नहीं है।

मुझे वह दिन भी याद है जब एक साधु वेशधारी ने एक गांव में कुंआँ के जल को दूध जैसा उजला बना दिया था। लोग उजला पानी देखकर महात्मा को चमत्कारी कहने लगे थे।

मुझे वह दिन भी याद है जब कलकत्ता नगरी में एक ताँत्रिक ने शराब की बोतल में भरी शराब का रंग पानी जैसा कर दिया था। पुलिस इंस्पेक्टर ने उसे सिद्ध मानकर छोड़ दिया था।

मुझे वह दिन भी याद है जब लकड़ी पर पानी फेंककर एक व्यक्ति ने लकड़ी में आग लगाई थी और लोग उसे चमत्कारी कहने लगे थे। उन दिनों मैं भी उपर्युक्त व्यक्तियों को चमत्कारी मानता था, किन्तु कालान्तर में मेरा भ्रम दूर हो गया।

मुझे एक ग्राम की घटना पूर्ण याद है जहाँ रेडियो सेट के अन्दर भूत और भूतनी गीत गाती हैं ,ऐसा लोग कहते थे। मुझे उन लोगों की अज्ञानता पर बहुत हँसी आई थी। मैंने उन लोगों को समझाने का यत्न किया था, किन्तु परिणाम उल्टा हुआ। मुझे ही बिस्तर गोल करना पड़ा।

आज परख नली में शिशु (Test Tube Baby), ह्रदय रोपण (Heart Transplantation) इत्यादि चमत्कार से कम नही है। पैरासाईकालाजी (Parapsychology) का क्षेत्र चमत्कारों से भरा है। मेरे विचार से पैरासाइकालोजी को पैराफिजिक्स, पैराकेम्सिट्री इत्यादि नामों से पुकारना अच्छा है। कारण कभी मिलने पर बताऊँगा।

संत साईं बाबा के चमत्कार को देखकर आप उनके भक्त बन गये और अजीब-अजीब सी कल्पना करने लगे हैं। क्या आपको पता→

जवाब चमत्कार दिखाकर दिया है। पुनश्च बाबा के सामने ही बाबा को कुछ ऐसे भी चमत्कार दिखाए कि बाबा शर्मिन्दित होकर क्रोधित हो गये।

इस संसार में लखपती बहुत हैं, किन्तु नाम किसी-किसी का होता है। यही हाल है धर्म के क्षेत्र का भी। संत साईं बाबा से अधिक चमत्कार दिखाने वाले अभी मौजूद हैं,किन्तु नाम हो गया है संत साईं बाबा का। नाम क्यों हुआ ,कैसे हुआ यह एक रहस्य है। मैं अभी उसके बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूँ। अभी केवल इतना ही कहूँगा कि संत साईं बाबा का प्रारब्ध अच्छा है , अतः कम जानते हुए भी उन्होंने अधिक नाम कमाया है।

संत साईं बाबा एक अच्छा ताँत्रिक है,बाबा के पास कुछ सिद्धि है- बाबा ने चमत्कार दिखाकर नाम कमाया है। किन्तु अब क्या दशा है आप स्वयं सोच सकते हैं।

अपरा विद्या के चमत्कारकर्ता का नाम वैज्ञानिक है। छोटे बड़े सब मिलाकर कई प्रकार के वैज्ञानिक होते हैं। यदि आप वैज्ञानिक के फोटो की पूजा करके वैज्ञानिक बनना चाहें तो यह संभव नहीं है। फोटो की पूजा या उसके आगे सिर पीट-पीट कर रोने-धोने से आपकी समस्या का समाधान नहीं मिलेगा। प्रत्युत आपकी समस्या और गंभीर होती जायेगी। आपकी समस्या का समाधान तो मेहनत से ही होगा।

मेरी यह बात आपको बुरी लगेगी,किन्तु गंभीरता से सोचने पर आप खुश होगें। प्यारे रामवृक्ष जी,परा विद्या भी एक विज्ञान है किन्तु इसके नियम बिल्कुल भिन्न हैं। अपरा विद्या के वैज्ञानिक

ए.बी.सी. से आरंभ करना पड़ेगा। कई साल मेहनत करने के बावजूद यह निश्चित नहीं है कि प्रत्येक अध्ययनकर्ता परा विद्या का भी वैज्ञानिक हो जायेगा। अपरा और परा दोनों विद्याओं में तो गति किसी एक की ही होती है। यथा कृष्ण इत्यादि को दोनों विद्याओं में→

→ गति थी। यही कारण है कि उन्हें अवतार कहा गया। स्मरण रहे,कृष्ण संत साईं बाबा की तरह चमत्कार दिखाते नहीं फिरे।

संत साईं बाबा ने अपने आप को शिरडी के साईं बाबा का अवतार कहकर आगे बढ़ने का यत्न किया था। यह बाबा कि महात्वाकांक्षा का प्रथम चरण था। बाबा ने लोगों (साईं बाबा के भक्तों) की सहानूभूति प्राप्त की और शनैः शनैः कुछ और कहने लगे। कृष्ण ने ऐसा कभी नहीं किया।

कृष्ण ने सैकड़ों लड़ाईयाँ लड़ी। साईं बाबा एक भी लड़ाई नहीं लड़ा , आपात् स्थिति के दौरान कुछ बोल भी नहीं सका।

यदि विभूति गिराने वाला व्यक्ति अवतार माना जाये ,तो अभी भारत में ही ऐसे कम से कम एक हजार ऐसे अवतार हैं जिन्हें मैं जानता हूँ। आप इस भ्रम से ऊपर उठें, इसी में आपका कल्याण है।

पुनश्च अवतार का नाम लेने मात्र से कुछ नहीं होता है। यह आलसियों की कल्पना मात्र है। यदि यह सत्य होता तो कृष्ण राम इत्यादि को लड़ाईयाँ नहीं लड़नी पड़ती। परन्तु उन्हें भी लड़ाईयाँ लड़नी पड़ी। इतिहास यह दिखाता है कि संसार का काम सांसारिक ढंग से ही होगा। आप इतिहास के प्राध्यापक रहे हैं,आप जानते हैं कि मुसलमानों की तलवारों के आगे दो हजार साल (तेरह सौ वर्ष) तक कोई भी सिद्ध नहीं टिक सका। सारे मंदिर तोड़ दिये,कोई सिद्ध नहीं निकला। भगवन् यह सब कल्पना है। तामसिक सिद्धि से राजसिक सिद्धि बड़ी होती है,राजसिक से सात्विक।

लड़ाईयाँ लड़नी पड़ीं थी। किन्तु अवतारों के उपासक सोचते हैं कि सब प्रभु कृपा से होगा। प्रभु हमारे शत्रुओं का सत्यानाश कर देंगे। प्रभु मेरा काम कर देंगे। यही सबसे बड़ी विडम्बना है।

उपासना से मानिसक शाँति अवश्य मिलती है। शांत मन से काम करने पर लौकिक उपलब्धियाँ भी होती हैं। किन्तु उपासना यदि केवल भौतिक उपलब्धि के लिए की जाय तो ठीक नहीं है। उपासना करने मात्र से रूपया नहीं मिलता है। रूपया तो कुछ काम करने से मिलता है।

रूपया की उपासना करने से रूपया मिलता है,काम की उपासना करने से काम,विद्या की उपासना करने से विद्या। इसी तरह प्रभु की उपासना करने से प्रभु मिलता है। प्रभु की उपासना करने से धन-सम्पत्ति नहीं मिलती है। धन-सम्पत्ति हेतु प्रभु उपासना के साथ-साथ द्रव्य की उपासना भी करनी पड़ती है। ध्यान से देखें,पुजारी को भी भोजन बनाना ही पड़ता है। अतः लौकिक कार्य लौकिक ढंग से ही होते हैं।

उपासना का अर्थ केवल प्रभु उपासना लेना बहुत बड़ी भूल है। प्रभु उपासना से प्रभु मिलता है। शेष कभी मिलने पर कहूँगा। आप अपने पत्र "मेरे भाग्य की विडम्बना" के तीसरे शुभारंभ में लिखते हैं "मेरे भाग्य की विडम्बना" भी लगभग उसी समय से प्रारंभ होती है जब मैं सत्य साईं समाज के प्रति आकृष्ट हुआ ..... नवोदित् भगवत् प्रेम मेरे अधूरे कार्यों की यथा शीघ्रपूर्ति में सहायक सिद्ध होगें। परन्तु इन दोनों में से एक ने भी अभी साथ नहीं दिया। इतना ही नहीं, घोर निराशा एवं बाधाएँ निरन्तर मार्ग में आने लगीं। चूंकि इस समय बाबा के प्रति मेरी लगन अधिक थी अतः मैं निरन्तर अपने दैनिक कीर्तन में उनसे